Inaugural Session: National Seminar on Tribes in Himachal Pradesh University

The inaugural session of the National Seminar on Tribes in Himachal Pradesh commenced with the auspicious lighting of the ceremonial lamp and the recitation of Saraswati Vandana. This was followed by a formal felicitation ceremony. Distinguished dignitaries, including the ViceChancellor Prof. Mahavir Singh, Pro-Vice-Chancellor Prof. Rajinder Verma, Dean of Studies Prof. B.K. Shivram, and Prof. Kamal Manohar Sharma, and key note speaker M.C. Behera along with other eminent guests, graced the occasion. The session also witnessed the release and online inauguration of the HPU Journal.

The Convener of the Seminar, Prof. Harish Thakur, formally introduced all dignitaries and delivered an insightful address highlighting various theoretical perspectives related to tribal studies. He discussed the stages of development and civilization among tribal communities and emphasized how modernization and social transformation have affected different tribes in diverse ways across regions.

Prof. B.K. Shivram, Dean of Studies, congratulated the Department of Political Science for organizing the seminar and commended its initiative to study the tribes of Himachal Pradesh through a holistic and interdisciplinary lens. He noted that Himachal Pradesh, encompassing both tribal and non-tribal regions, requires a balanced understanding to bridge socio-economic and cultural divides for inclusive development.

Pro-Vice-Chancellor Prof. Rajinder Verma extended his congratulations to the department and emphasized the importance of continued academic engagement for the preservation and promotion of tribal identity, heritage, and knowledge systems through sustained research and collaboration.

The Chief Guest and Vice-Chancellor, Prof. Mahavir Singh, appreciated the department's academic efforts and stressed the need for more scientific and data-based studies on tribal regions. He underscored the ecological and developmental significance of these areas, particularly in the context of sustainable ecosystems and green energy, and encouraged young scholars to pursue rigorous, evidence-based, and field-oriented research.

A shawl and topi was presented as a token of respect to the **Keynote Speaker, Prof. M.C. Behera**,

He delivered an engaging and comprehensive address on the evolution of tribal societies in India. He examined the origin and development of tribes during the pre-colonial, colonial, and post-colonial periods and highlighted the importance of constitutional measures adopted in the post-independence era for safeguarding tribal rights and identity. Prof. Behera further

elaborated on the diversity among tribes in terms of their historical origin and geographical isolation, underscoring the need for a contextually grounded and historically informed approach to tribal studies.

In conclusion, the inaugural session set the tone for the seminar by emphasizing the interdisciplinary relevance of tribal research, the importance of preserving cultural diversity, and the vital role of academic institutions in advancing inclusive and knowledge-based development in tribal regions.

Second Session

The second session of the seminar was chaired by Prof. Mridula Sharda.

In this session, Dr. Joginder Saklani and other faculty members, along with several research scholars, presented their papers on various aspects of tribal life, socio-economic transformation, and governance in tribal regions. The session featured insightful discussions on regional variations, policy frameworks, and developmental challenges concerning tribal communities in Himachal Pradesh and beyond.

Third Session

The third session was chaired by Dr. Joginder Saklani, where research scholars and M.A. students presented their research papers. The presentations covered a wide range of themes including tribal identity, social change, representation, and the impact of modernization on traditional tribal institutions. The session provided an engaging platform for emerging scholars to share their perspectives and receive constructive feedback from faculty and peers.

Vote of Thanks by the Chairperson, Department of Political Science

On behalf of the Department of Political Science, **Dr. Abha Chauhan Khimta**, Chairperson of the Department, extends heartfelt gratitude to all dignitaries, resource persons, speakers, and participants for their valuable presence and insightful contributions to this national seminar. Sincere appreciation is also extended to faculty members Dr. Harish K. Thakur, Dr. Vikas, Dr. Mini Pathak Dogra, scholars, and students whose dedication and cooperation have made this academic event truly successful, meaningful, and memorable

Conclusion

In conclusion, the seminar provided a valuable platform for academic dialogue and interdisciplinary engagement on tribal issues in Himachal Pradesh. The sessions collectively emphasized the need for sustained research, policy attention, and inclusive approaches to understanding and empowering tribal communities in the state

आयोजन एचपीयू में सजी राजनीति विज्ञान विभाग की एक दिवसीय संगोष्ठी

पर्यावरण संरक्षण में जनजातियों की अहम भूमिका

सिटी रिपोर्टर-शिमला

हिमाचल प्रदेश विश्वविद्यालय के राजनीति विज्ञान विभाग द्वारा हिमाचल प्रदेश की जनजातियाँ आधुनिकता, पहचान और अस्तित्व विषय पर एक दिवसीय राष्ट्रीय संगोष्ठी का आयोजन किया। हिमाचल प्रदेश विश्वविद्यालय के कुलपति आचार्य महावीर सिंह ने कहा कि आज के वक्त में पर्यावरण संरक्षित करने की आवश्यकता है। गद्दी जनजाति पर्यावरण को बचाने के लिए महत्वपूर्ण भूमिका निभा रही है। उन्होंने युवा शोधर्थियों से आह्वान किया कि वे शोध करते समय वैज्ञानिक तथ्यों के साथ वास्तविक शोध बिंदुओं का भी

ध्यान रखें। कुलपति ने कहा कि जनजातीय लोगों की विशेष भूमिका आपदा प्रबंधन में होनी चाहिए क्योंकि यह लोग अधिकतर समय अपने कार्यों के लेकर घर से बहार खुले वातावरण में रहते हैं और उन्हें पर्यावरण की अच्छी-खासी समझ रहती है। इस अवसर पर प्रति-कुलपति आचार्य राजेंद्र वर्मा और डीन ऑफ स्टडीज प्रो बीके शिवराम विशिष्ट अतिथि के रूप में उपस्थित रहे। संगोष्ठी के मुख्य वक्ता के रूप में प्रसिद्ध शिक्षाविद प्रो. एसी बेहरा ने हिमाचल प्रदेश की जनजातीय संस्कृति, उनकी सामाजिक संरचना तथा आधुनिक परिवर्तनों के प्रभाव पर प्रकाश डाला। संगोष्ठी में विभिन्न विश्वविद्यालयों से आए आचार्यों, शोधार्थियों तथा विद्यार्थियों ने अपने शोधपत्र प्रस्तुत किए। प्रस्तुतियों में हिमाचल की लाहौल, किन्नौर, पांगी तथा भरमौर की जनजातियों के इतिहास, परंपराओं, भाषा, त्यौहारों और आधुनिकता के प्रभाव पर गहन चर्चा हुई। कार्यक्रम के अंत में विभागाध्यक्ष प्रो. आभा चौहान खिमटा ने सभी अतिथियों, प्रतिभागियों तथा आयोजन दल का आभार व्यक्त किया और कहा कि यह संगोष्ठी हिमाचल की जनजातीय संस्कृति को अकादमिक विमर्श के केंद्र में लाने की एक सार्थक पहल रही। इस अवसर पर आचार्य कमल मनोहर के अतिरिक्त कई अधिष्ठाता, विभागाध्यक्ष, शोध केन्द्रों के निदेशक भी उपस्थित रहे।

दैनिक भास्कर शिमला भास्कर 16-10-2025

सिटी एंकर

ग्रामीण अनुभव और पारंपरिक पर्यावरण संरक्षण तकनीक का लाभ मिलेगा

गद्दी समुदाय की विशेषज्ञता से आपदा प्रबंधन और प्राकृतिक आपदाओं से बचाव पर ध्यान, रिसर्च में शामिल करेगा एचपीयू

एजुकेशन रिपोर्टर| शिमला

हिमाचल प्रदेश यूनिवर्सिटी के रिसर्चर अब फील्ड रिसर्च के दौरान आपदा प्रबंधन के लिए गद्दी समुदाय के लोगों की भी मदद लेंगे। इन्हें भी रिसर्च में शामिल किए जाएगा। एचपीयू के वीसी प्रो. महावीर सिंह ने इस तरह के आदेश दिए हैं। मंगलवार को एचपीयू में हुई राजनीति विज्ञान विभाग की एक दिवसीय संगोष्ठी में उन्होंने कहा कि आज के वक्त में पर्यावरण संरक्षित करने की आवश्यकता है। गद्दी जनजाति पर्यावरण को बचाने के लिए महत्वपूर्ण भूमिका निभा रही है। उन्होंने युवा शोधार्थियों का आवाहन किया कि वे शोध करते समय वैज्ञानिक तथ्यों के साथ वास्तविक शोध बिंदुओं का भी ध्यान रखें और जनजातीय लोगों की विशेष भूमिका आपदा प्रबंधन में होनी चाहिए, क्योंकि यह लोग अधिकतर समय अपने कार्यों के लेकर घर से बाहर खुले वातावरण में रहते हैं और उन्हें पर्यावरण की अच्छी-खासी समझ रहती है। उन्होंने कहा कि हमारा प्रदेश पहाड़ी प्रदेश है। ऐसे में चंबा जैसे दुर्गम क्षेत्रों में गद्दी समुदाय के लोग अपने मवेशियों के साथ अक्सर ऐसी जगहों पर जाते हैं, जहां पर आम लोगों का पहुंचना बेहद मुश्किल होता है। इसलिए विवि के रिसर्चरों को फील्ड में जाकर उनके अनुभव का फायदा उठाना चाहिए।

• पर्यावरण संरक्षण में देवताओं की अहम भूमिका: हिमाचल प्रदेश विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. महावीर सिंह ने कहा कि कि स्थानीय देवी देवताओं के संरक्षण में जहां पर्यावरण से

संबंधित चेतावनी मिलती रहती है। इससे बेतरतीब निर्माण करने के लिए रोक लग जाती है। ऐसे में पर्यावरण संरक्षण में देवी-देवताओं की अहम भूमिका हैं। देवभूमि हिमाचल में लोग देवताओं के आदेशों को मानते हैं और उनका पालन करते हैं।

• शोध पत्र प्रस्तुत किए : राजनीति विज्ञान विभाग की संगोष्ठी में विभिन्न विश्वविद्यालयों से आए आचार्यों, शोधार्थियों और विद्यार्थियों ने अपने शोधपत्र प्रस्तुत किए। मुख्य वक्ता प्रो. एमसी बेहरा ने हिमाचल की जनजातीय संस्कृति, सामाजिक संरचना और आधुनिक परिवर्तनों के प्रभाव पर प्रकाश डाला। अध्यक्षता प्रो. आभा चौहान खिमटा ने की, जबकि संयोजक प्रो. हरीश ठाकुर रहे। प्रस्तुतियों में लाहौल, किन्नौर, पांगी और भरमौर की जनजातियों के इतिहास, परंपराएं, भाषा, त्यौहार और आधुनिकता पर गहन चर्चा हुई। आचार्य कमल मनोहर और कई विभागाध्यक्ष व निदेशक भी उपस्थित रहे।

• एचपीयू और नार्वे मिलकर हिमालयी आपदाओं पर करेंगे रिसर्च: हिमाचल प्रदेश विश्वविद्यालय (एचपीयू) ने नार्वे के शीर्ष भू-तकनीकी संस्थान एनजीआई के साथ एमओयू साइन किया है। इसके तहत हिमालयी क्षेत्रों में बादल फटने, प्राकृतिक आपदाओं के कारण और नुकसान कम करने पर रिसर्च की जाएगी। संयुक्त अनुसंधान में जमीन धंसने, ढलान स्थिरता, फ्लैश फ्लड जोखिम और जलवायु परिवर्तन पर ध्यान केंद्रित होगा। आईएनएसएआर मॉनिटरिंग, यूएवी फोटोग्रामेट्री और आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस जैसी आधुनिक तकनीकों का उपयोग करके प्रशिक्षण और क्षमता निर्माण पर भी काम किया जाएगा।

आज के दौर में पर्यावरण संरक्षित करने की जरूरत : महावीर

हिमाचल दस्तक ▮ शिमला

विश्वविद्यालय के राजनीति विज्ञान विभाग द्वारा हिमाचल प्रदेश की जनजातियां, आधुनिकता, पहचान और अस्तित्व विषय पर एक दिवसीय राष्ट्रीय संगोष्ठी का आयोजन किया गया। इस दौरान विश्वविद्यालय के वीसी आचार्य महावीर सिंह ने कहा कि आज के दौर में पर्यावरण संरक्षित करने की आवश्यकता है। गद्दी जनजाति पर्यावरण को बचाने के लिए महत्वपूर्ण भूमिका निभा रही है। उन्होंने युवा शोधार्थियों से आह्वान किया कि वे शोध करते समय वैज्ञानिक तथ्यों के साथ वास्तविक शोध बिंदुओं का भी ध्यान रखें। वीसी ने कहा कि जनजातीय लोगों की विशेष भूमिका आपदा प्रबंधन में होनी चाहिए, क्योंकि ये लोग अधिकतर समय अपने कार्यों के लेकर घर से बाहर खुले वातावरण में रहते हैं और उन्हें पर्यावरण की अच्छी-खासी समझ रहती है। उन्होंने कहा कि स्थानीय देवी-देवताओं के संरक्षण में जहां पर्यावरण से संबंधित चेतावनी मिलती रहती है, वहीं सभी निवासियों को भी बेतरतीब निर्माण करने के लिए रोक लग जाती है। इस अवसर पर प्रति-कुलपति आचार्य राजेंद्र वर्मा तथा डीन ऑफ स्टडीज प्रो. बीके शिवराम विशिष्ट अतिथि के रूप में उपस्थित रहे। संगोष्ठी के मुख्य वक्ता के रूप में प्रसिद्ध शिक्षाविद प्रो. एमसी बेहरा ने अपने उद्बोधन में हिमाचल प्रदेश की जनजातीय संस्कृति, उनकी सामाजिक संरचना तथा आधुनिक परिवर्तनों के प्रभाव पर प्रकाश डाला। कार्यक्रम की अध्यक्षता राजनीति विज्ञान विभाग की अध्यक्ष प्रो. आभा चौहान खिमटा ने की तथा संगोष्ठी के संयोजक प्रो. हरीश ठाकुर रहे। उन्होंने कहा कि ऐसी अकादमिक चर्चाएं न केवल अनुसंधान को समृद्ध करती हैं, बल्कि हिमालयी समाज की विविधता को समझने का अवसर भी प्रदान करती हैं। इस अवसर पर आचार्य कमल मनोहर के अतिरिक्त कई अधिष्ठाता, विभागाध्यक्ष, शोध केंद्रों के निदेशक भी उपस्थित रहे।

▮ एचपीयू में एक दिवसीय राष्ट्रीय संगोष्ठी के दौरान बोले वीसी

विवि में 10 दिवसीय आत्मरक्षा प्रशिक्षण शिविर का आयोजन

शिमला। हिमाचल प्रदेश विश्वविद्यालय में छात्र-छात्राओं के लिए आयोजित 10 दिवसीय आत्मरक्षा प्रशिक्षण शिविर का बुधवार को समापन समारोह आयोजित किया गया। यह शिविर राष्ट्रीय उच्चतर शिक्षा अभियान (रूसा) 2.0 के वित्तीय सहयोग से महिला अध्ययन एवं विकास केंद्र द्वारा विश्वविद्यालय परिसर में आयोजित किया गया। इस प्रशिक्षण में विश्वविद्यालय के लगभग 50 विद्यार्थियों ने भाग लिया। प्रशिक्षण तकनीकी सहयोग से ट्रेडिशनल ओकीनावन गोजू र्यू कराटे डो फेडरेशन ऑफ हिमाचल प्रदेश द्वारा प्रदान किया गया। कार्यक्रम के मुख्यअतिथि विश्वश्वविद्यालय के वीसी प्रो. महावीर सिंह ने कहा कि आत्मरक्षा प्रशिक्षण विद्यार्थियों को आत्मनिर्भर और आत्मविश्वासी बनाने में अत्यंत सहायक सिद्ध होता है। उन्होंने कहा कि विश्वविद्यालय सदैव ऐसे कार्यक्रमों को प्रोत्साहित करता रहेगा, जो विद्यार्थियों के सर्वांगीण विकास और सशक्तिकरण में योगदान दें।